8794

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २६ अंक : २

मई २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/ 8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ **अंक - २, मई** **२००२**

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिए
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

।। जैन भवन ।।

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनिजी	५१
२.	पाटलिपुत्र का इतिहास	पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमल जी महाराज	६२
३.	जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा	श्री पृथ्वीराज जैन	७४

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

जीवन शक्ति पर्याप्ति— जीवन को व्यवस्थित रूप में चलाने वाली शक्ति को पर्याप्ति कहते है।

१) आहार पर्याप्ति—भोजन ग्रहण करने के बाद उस भोजन पदार्थ में से विभाजन करके अलग-अलग कार्य के लिए रस तैयार कर अनावश्यक पदार्थ को मल—मूत्र के रूप में निकालना आहार पर्याप्ति का कार्य है।

२) शरीर पर्याप्ति— आहार द्वारा तैयार विभिन्न रस द्वारा शरीर का निर्माण या विकास करना शरीर पर्याप्ति का कार्य है।

३) इन्द्रीय पर्याप्ति— शरीर के अन्दर अलग-अलग प्रकार की अनुभूति के लिए नाक—कान आदि तैयार करना या इसका संचालन करना इन्द्रिय पर्याप्ति का कार्य है।

४) श्वासोश्वास— शरीर की उर्जाशक्ति का संचालन करना तथा रक्त शोधन का कार्य करना श्वासोश्वास पर्याप्ति का कार्य है।

५) भाषा पर्याप्ति— क वर्गादि उच्चारण शक्ति को भाषा पर्याप्ति कहते है। इसी पर्याप्ति के सहारे हम अपने विचार को व्यक्त (प्रकार) कर पाते है।

६) मन पर्याप्ति— जिसके द्वारा हम भूत-भविष्य सुख—दुःख याद रखते है। उसे मन पर्याप्ति कहते है। आज की परिभाषा में इसे मेमोरी ज्ञान•कोष कहते है। इन छः शक्तियों से ही हमारा जीवन सम्पन्न है। इन छः शक्तियों में जब जीव अपनी योग्यतानुसार योग्यता से कूकर्म प्राप्त करता है तब उसे अपर्याप्त जीव कहते है। अपर्याप्त अर्थात विकलांग जीव।

अपनी-अपनी योग्यतानुसार जीव इन पर्याप्ति को उपलब्ध करता है। इसमें अपनी पूर्वोचित कर्मानुसार अल्पाधिक भी होती है। एकेन्द्रिय (स्थावर) जीव को आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोश्वास में चार पर्याप्ति होती है।

विकलेन्द्रिय—दो इन्द्रिय युक्त, तीन इन्द्रिय युक्त और चार इन्द्रिय युक्त प्राणी को विकलेन्द्रिय जीव कहते है। इन जीवों को विकलेन्द्रिय इसलिये कहा जाता है कि इनके पास इन्द्रियां होने पर भी इन इन्द्रियों से सही रूप में कार्य करने में असमर्थ है।

१) दो इन्द्रिय जीव– जिस जीव को दो इन्द्रिय हो (स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रीय) उन्हें दो इन्द्रिय जीव कहते है। जैसे–शंख, कौड़ी, छीप, अलसीया, क्रिमी, बासीभोजन आदि। इन जीवों के हाथ पैर नहीं होते।

द्विदल में भी दो इन्द्रिय जीव होता है। द्विदल अर्थात कच्चा दूध-दही के साथ दलहन का मिश्रण। इन दोनों का मिश्रण होते ही दो इन्द्रिय जीव उत्पन्न हो जाता है। आपको याद होगा कि आज भी समाज में दाल के साथ दूध, दही खाना अनुचित मानते है। इस अनुचित कार्य को बन्द करने के लिए दूध में नमक डालकर खाना ही निषेध कर दिया गया है। बच्चे को इससे बचाने के लिये एक लौकिक वाक्य है–दूध में नमक डालने से गाय का स्तन फट जाता है, अनुमान है इस भय से बच्चे दूध में नमक नहीं डालते है।

कच्चे दूध-दही में दलहन मिलाकर खाने से पेट में कीड़े होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है।

२) त्रेइन्द्रिय जीव– जिस जीव के तीन इन्द्रिय हो (स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय) उसे त्रेइन्द्रिय जीव कहते है। जैसे–चीटीं, मकोड़ा, इयल, जूं, घनेरा (अलाक्रीड़ा) दीमक, कान खजूरा आदि।

३) चतुरिन्द्रिय जीव— जिस जीव में चार इन्द्रिय हो (स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय) उसे चतुरिन्द्रिय जीव कहते है। जैसे—बिच्छु, मच्छर, भ्रमर आदि।

इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त मिलाकर छः भेद है।

दो इन्द्रिय पर्याप्त, दो इन्द्रिय अपर्याप्त

त्रिइन्द्रिय पर्याप्त, त्रिइन्द्रिय अपर्याप्त

चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त

पंचेन्द्रिय — जिस जीव में पाँच इन्द्रिय होती है (स्पर्श, रस प्राण, चक्षु, कर्ण) उसे पंचेन्द्रिय जीव कहते है।

पंचिन्द्रिय जीव के मुख्य चार भेद है।

देव, मनुष्य, नरक, तिर्यंक्।

पंचेन्द्रिय तिर्यंक् – (२० भेद)

१) जलचर– पानी में जीवन जीने वाले जीव को जलचर जीव कहते हैं। जैसे–मछली, मगर, कछुवा आदि।

२) स्थलचर– जमीन में विचरण करने वाले या जीवन यापन करने वाले जीव स्थलचर कहलाते है। स्थलचर तीन प्रकार के होते है। जैसे– गाय, घोड़ा, साँप, मोर, तोता।

क) उरपरिसर्प–पेट के बलपर चलने वाले जीव को उपरिसर्प स्थलचर कहते है। जैसे– साँप, अजगर आदि।

ख) भूजपरिसर्प – भुजा के बलपर चलने वाले या जिस जीव का हाथ पैर भी कार्य करता है, उसे भुजपरिसर्प कहते है। जैसे– गिलहरी, चूहा आदि।

ग) चतुष्पद — चार पैर से चलने वाले जीव को चतुष्पद जीव कहते है। जैसे– गाय, घोड़ा, सिंह।

३) खेचर— आकाश में उड़ने वाले जीव को खेचर कहते है। जैसे- कोयल, मोर, तोता, चील आदि।

इन सभी जीवों का जन्म दो प्रकार से होता है।

(१) गर्भज (२) संमूर्च्छिम।

१) गर्भज– नर-मादा, स्त्री-पुरुष के शुक्ररज के मिलन से गर्भ में कुछ समय परिपक्व होने के बाद जो जन्म होता है, उसे गर्भज प्राणी कहते है।

२) संमूर्च्छिम– जो स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना शरीर के किसी रस से जन्म लेने वाले जीव को संमूर्च्छिम जीव कहते है।

उक्त पाँच प्रकार के तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव गर्भज, संमूर्च्छिम, पर्याप्त

और अपर्याप्त मिलकर २० भेद होते है।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय के २० भेद ।

१. पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

२. अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

३. पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

४. अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

५. पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

६. अपर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

७. पर्याप्त संमूर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

८. अपर्याप्त संमूर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

९. पर्याप्त गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१०. अपर्याप्त गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

११. पर्याप्त संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१२. अपर्याप्त संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१३. पर्याप्त गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१४. अपर्याप्त गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१५. पर्याप्त संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१६. अपर्याप्त संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१७. पर्याप्त गर्भज खेचर स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१८. अपर्याप्त गर्भज खेचर स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

१९. पर्याप्त संमूर्च्छिम खेचर स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

२०. अपर्याप्त संमूर्च्छिम खेचर स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय

एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, त्रेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय युक्त जीव हमेशा समूर्च्छिम ही होता है।

बहि : कर्ण युक्त जीव बच्चे देते है और अन्तर्कर्ण युक्त जीव अण्डे देते है।

पाँच इन्द्रिय होते हुए भी इन इन्द्रियों का वास्तविक प्रयोग न कर पाने के कारण उपरोक्त पंचेन्द्रिय जीव तिर्यंच कहलाते है। इनके पास मन (मेमोरी) कम होने के कारण इन्द्रियाँ शिथिल रहती है।

आलस्यता के कारण जीव तिर्यंच योनी में जन्म ग्रहण करता है।

मनुष्य — भेद — ३०३

जिनके पाँच इन्द्रियाँ पूर्णरूप से हो, मन प्रवल हो, इस प्रकार विश्व में जिसको सर्वश्रेष्ठ स्थान उपलब्ध है उसे मनुष्य कहते है।

इनके मुख्य तीन भेद है।

(१) पर्याप्त गर्भज (२) अपर्याप्त गर्भज (३) अपर्याप्त संमूर्च्छिम।

१) पर्याप्त गर्भज – माता-पिता के संयोग से माता के गर्भ में ९ महीना तक विकसित होकर संसार में पैर रखने वाले, और सम्पूर्ण छः पर्याप्त (शक्ति) को प्राप्त करने वाले जीव पर्याप्त गर्भज मनुष्य कहलाते है। यहीं जीव संसार में सर्वोत्कृष्ट कर्म करने में समर्थ होना है। यहीं जीव महान से महानतम भगवान बनने में समर्थ है तो इसके विपरीत सभी मर्यादा को छोड़कर निम्नतम कार्य भी मनुष्य ही करता है। मनुष्य द्वारा ही विश्व का निर्माण और विसर्जन भी होता है। अनुमान है — पौराणिक मान्यतानुसार ब्रह्माजी को सर्वप्रथम मनुष्य उत्पत्ति की कल्पना की आवश्यकता हुई। महानैसर्गिक व्यवस्था के अनुरूप इन मनुष्यों में भी समय और क्षेत्र के प्रभाव से अलग-अलग रूप और आचरण पाया जाता है। मनुष्य किसी काल में बिराट काय वन्यप्राणी जैसे पाया जाता है तो कभी वामन काय रूप मनुष्य बन जाता है। मानसिक दशा में भी इन मनुष्यों में क्षेत्र और काल का प्रभाव पाया गया है। इसीलिये डार्बिन ने मनुष्य की उत्पत्ति ३ करोड़ वर्ष पूर्व अनुमान किया है। जैन दर्शन मनुष्य को विभिन्न रूप में नित्य माना है। समय-समय इनमें शारीरिक, मानसिक, आचार व्यवहार में परिवर्तन अवश्य बताये है। जैन दर्शन के मान्यतानुसार मनुष्य को कभी सामाजिक नियमों से मुक्त, कभी सुसंस्कृत, कभी भौतिकता के अतिरिक्त कभी निम्नता की गली में बताये है।

मनुष्य का विस्तार रूप जानने के लिए जैन दर्शन के मतानुसार कुछ भौगोलिक नक्शा देखना जरूरी है।

लोक - आलोक—

लोक का आकार — कल्पना करें, एक व्यक्ति पैर फैलाकर दोनों हाथ फैलाते हुए कमर में रखने से जो आकार बनता हो उससे लोक (संसार) कहते है। इसको चौदह भाग में विभाजित किया गया है। इसलिए इसको चौदह राजलोक भी कहते है। इसके अन्दर ही संसारी जीव रहता है। इसके मध्य भाग में जिसे त्रसनाड़ी कहते है। उसी में त्रस जीव पाया जाता है। इस चौदह राजलोक के अतिरिक्त स्थान को आलोक कहते है। इस आलोक में जीव के अस्तित्व को अस्वीकार किया गया है। इस चौदह राज लोक के मध्य भाग को (कमर के स्थानपर) तिर्च्छालोक, मर्त्यलोक, या मनुष्यलोक कहते है। इसका क्षेत्रफल १८०० योजन है। (यह प्राचीन माप है, इसको आज के नये माप में समीक्षा करना आवश्यक है)। इस तिर्च्छालोक में असंख्य द्वीप समुद्र है। इसके मध्य केन्द्र बिन्दु में एक लाख योजन प्रमाण जम्बुद्वीप है। इस जम्बुद्वीप के उत्तर और दक्षिण भाग में क्रमिक छः पर्वत और सात क्षेत्र है। एक क्षेत्र के बाद क्रमिक एक पर्वत है।

छः पर्वत का नाम	-	सात क्षेत्र का नाम
(१) लघुहिमवंत	-	(१) भरत क्षेत्र
(२) महाहिमवंत	-	(२) हिमवंत
(३) निषध	-	(३) हरीवर्ष
(४) नीलवंत	-	(४) महाविदेह
(५) रुक्मणी	-	(५) रम्यक
(६) शिखरी	-	(६) हिरण्यवंत
	-	(७) ऐरावत

महाविदेह के मध्यभाग में एक लाख प्रमाण ऊंचा मेरुपर्वत है। इसके उत्तर और दक्षिण में क्रमशः उत्तर कुरु और देवकुरु है। इस प्रकार जम्बुद्वीप

में सात महापर्वत और ९ (नव) महाक्षेत्र है। तदुपरान्त शिखरी पर्वत और लघु हिमवंत पर्वत के दोनों छोर में लवण समुद्र के अन्दर, चारों छोर में दो-दो विभाग होकर एक विभाग में सात-सात द्वीप है। जैन पारिभाषित शब्द में इसे दाड़ा कहते है। इन आठ दाड़ा में सात-सात अर्न्तद्वीप को मिलाकर ५६ अर्न्तद्वीप है।

दो प्रकार क्षेत्र से जन्म लेने के कारण मनुष्य क्षेत्रानुसार दो प्रकार कहा गया है।

(१) कर्म भूमिज - (२) अकर्म भूमिज।

१) कर्म भूमिज– जिस क्षेत्र में असि (अस्त्र-सस्त्र) मसि (लेखन क्रिया) कृषि (खेतीबाड़ी) होती है। उसे कर्मभूमि कहते है और उस क्षेत्र में जन्म लेने वाले मनुष्य कर्मभूमिज कहलाते है।

२) अकर्म भूमिज जिस क्षेत्र में असि, मसि, कृषि का अभाव है, उसे अकर्मभूमि कहते है और जन्म लेने वाले मनुष्य अकर्मभूमिज कहलाते है।

तीर्थंकरादि महापुरुष कर्मभूमि में ही जन्म लेते है। कर्मभूमि में ही धर्म-कर्म-मोक्ष संभव है। अकर्मभूमि के मनुष्य में कोई परस्पर मानविक व्यवहार नहीं होता है। वे मनुष्य पशुवत् जीवन निर्वाह करते है। उन्हें युगलिक मनुष्य भी कहते है। युगलिक इसलिये कहा जाता है क्योंकि वे एक साथ दो (भाई-बहन) के रूप में जन्म लेते है। बड़े होकर पति-पत्नी में बदल जाते है, और संतान को जन्म देकर एक साथ मर जाते है। वे जीव लघु कर्मी होते है, इनके मन सरल और निष्पाप होते है। वन्य पदार्थ से ही जीवन निर्वाह करते है। यहाँ की धरती रसवती-फलवती होती है। वृक्ष अमृत तुल्य फल देता है। इन वृक्षों को शास्त्रीय भाषा में कल्पवृक्ष कहते है।

भरत, एरावत, और महाविदेह वे कर्मभूमि है। महाविदेह में सदाकाल चतुर्थ काल जैसा मानवजीवन होता है। पर भरत और एरावत में समय के आधार पर मनुष्य जीवन में परिवर्तन होता है। यहाँ के मनुष्य भी कभी अकर्म भूमिज (युगलिक) हो जाते है। जैन दर्शन सिद्धान्तानुसार चक्रवत समय को अनन्त माना गया है।

काल चक्र— कालचक्र को समझने के लिए एक १२ आरक युक्त पहिए की कल्पना करें। सम्पूर्ण एक चक्र समय को एक कालचक्र कहते है। उतरते समय को अवसर्पिणी और चढ़ते समय को उत्सर्पिणी काल कहते है। अवसर्पिणी काल का प्रथम तीन आरा का समय काल युगलिक होते है। तीसरे आरे का ३ वर्ष ८ महीना १५ दिन बाकी रहने पर प्रथम तीर्थंकर का जन्म होता है। फिर वे उचित समय पर सभी को कर्म का ज्ञान करते है। असि, मसि और कृषि की शिक्षा देकर दीक्षा लेकर धर्म मार्ग बनाते है। इस अवसर्पिणी काल के आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर ने पुरुषों को ७२ कलाएँ और स्त्री को ६४ कलाओं का ज्ञान सिखाया। सर्वप्रथम अपनी पुत्री ब्राह्मी को लेखन क्रिया सिखाने के कारण लिपि का नाम ही ब्राह्मी लिपि पड़ गया। (इसकी विस्तृत जानकारी कल्पसूत्र में है।) चतुर्थ आरा के ३ वर्ष ८ महीना १५ दिन बाकी रहने पर अन्तिम यानि २४वां तीर्थंकर मोक्ष जाता है। जैन दर्शन के नियमानुसार एक उत्सर्पिणी अथवा एक अवसर्पिणी काल में २४ तीर्थंकर होते है। अन्तिम तीर्थंकर का मोक्ष होने के बाद क्रमशः आयुष्य, शरीर, मनोबल, पृथ्वी का क्षेत्रफल कम होता जाता है। यह घटने का कार्य अन्तिम तीर्थंकर के मोक्ष के बाद ही प्रारंभ होता है, ऐसी बात नहीं है, पर इसके बाद विशेष रूप दिखने लगता है। छटा आरा आते-आते पृथ्वी में गरमी इतनी बढ़ जाती है कि मनुष्य दिन को गुफा में रहते है और रात्रि को बाहर निकलकर धूप में जला हुआ जीवादि का भक्षण करके जीवन निर्वाह करते है। पृथ्वी का क्षेत्रफल भी बहुत कम हो जाता है। मनुष्य का पूर्णायु २० वर्ष का होता है। और १.३० फुट की ऊचाई का शरीर होता है। उत्सर्पिणी काल इसके विपरीत समझे। इस काल में तीसरे आरे में २४ तीर्थंकर होते है।

१५ कर्म भूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अन्तर्दीप है। अन्तर्द्वीप के मनुष्य हमेशा युगलिक ही होते है।

सामान्य ज्ञान से इन सभी तथ्योंपर हमें संदेह हो सकता है। विशिष्ट अभ्यास के बाद ही इस तत्व पर वास्तविक रूप में पहुँचा जा सकता है।

कालचक्र

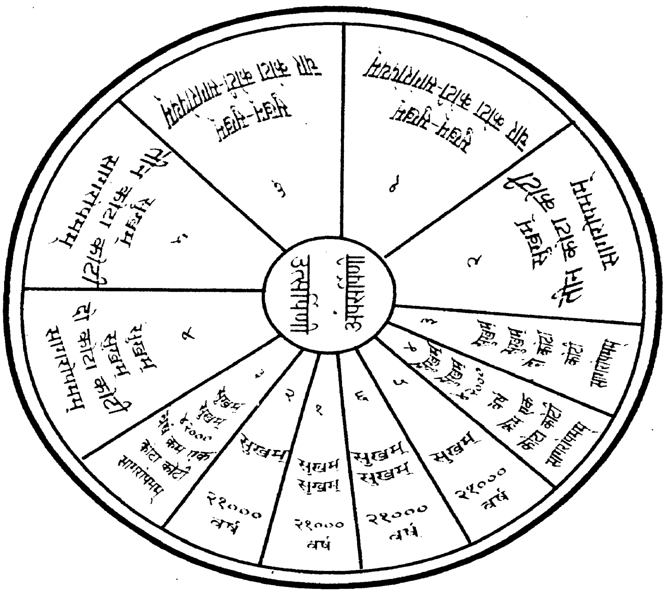

कर्मभूमि	जम्बूद्वीप	धातकीखंड	पुष्करावर्त	कुल
भरतक्षेत्र	१	२	२	५
एरावतक्षेत्र	१	२	२	५
महाविदेहक्षेत्र	१	२	२	५
कुल कर्मभूमि	३	६	६	१५

अकर्म भूमि	जम्बुद्वीप	धातकी खंड	पुष्करावर्त	कुल
हिमवंत क्षेत्र	१	२	२	५
हरिवर्ष क्षेत्र	१	२	२	५
उत्तर कुरुक्षेत्र	१	२	२	५
देव कुरुक्षेत्र	१	२	२	५

रम्यक् क्षेत्र	१	२	२	५
हिरण्यवंत क्षेत्र	१	२	२	५
कुल अकर्म भूमि	६	१२	१२	३०

शिखरी पर्वत और हिमवान पर्वत के दोनों छोर जो लवण समुद्र में पड़ते है। इसके एक-एक छोर में दोनों हस्ती दन्ताकार भूमि है, उस एक-एक में ९-९ द्वीप है। इसे अन्तर्द्वीप कहते हैं। इस प्रकार ५६ अन्तर्द्वीप है।

१५	कर्मभूमि।
३०	अकर्मभूमि।
५६	अन्तर्द्वीप।
१०१	

इन १०१ क्षेत्र में ....

गर्भज पर्याप्त मनुष्य	-	१०१
गर्भज अपर्याप्त मनुष्य	-	१०१
संमुर्च्छिम अंपर्याप्त मनुष्य	-	१०१
मनुष्य का कुल भेद		३०३

गर्भ में जन्म लेने वाले जीव पूर्ण जीवन शक्ति को प्राप्त करता है। जब जीव सम्पूर्ण जीवनशक्ति को प्राप्त करता है। तब वह पर्याप्ति जीव कहलाता है। पर्याप्त को पूर्ण करने से पूर्व मरने वाले को जीव अपर्याप्त कहते है। मनुष्य के १४ स्थानीय अशूची पदार्थ से जन्म लेने वाले जीव संमूर्च्छिम अपर्याप्त कहलाते है।

अशुचिस्थान— मल, मूत्र, पसीना, कफ, थूक, रक्त, आँसू, वीर्य, झूठा पात्र, लार, नाक का मैल, वमन, मांस-मज्जा में, स्त्रीयोनी में ।

हमारे मुख से निकले लार (थूक) में मुँह से निकलने के ४७ मिनट के बाद संमुर्च्छिम मनुष्य की उत्पत्ति होती है। इसीलिये जैन दर्शन के आचार नियमानुसार भोजन करने के बाद थाली धोकर पानी पीने का विधान है। जैन

धर्म की विधि-विधान मात्र आत्मा-परमात्मा से ही सम्बन्धित नहीं है। इन सभी नियमों को, आत्मिक, शारीरिक, सामाजिक और मानसिक स्थिति को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

उदाहरण के रूप में थाली धोकर पानी पीने के विधान को ले।

धार्मिक (आध्यात्मिक)— धार्मिक दृष्टि से थाली धोकर पानी पीने से एक आयंबिल का लाभ मिलता है अर्थात् एक आयंबिल करने से जो पुण्य होता है। उतना पुण्य इससे होता है। इससे उत्पन्न होने वाले जीवों की हिंसा से बचते है।

शारीरिक— भोजन करने से पूर्व पानी पीना पत्थर समान , मध्य में अमृत समान और अन्त में जहर समान माना गया है। पर व्यवहार में पाया जाता है कि अक्सर व्यक्ति भोजन करके तुरन्त ठण्डा पानी पी लेते हैं। फलस्वरूप अनेक पेट सम्बन्धित रोगों का शिकार होते है। थाली में एक/दो ग्लास पानी डालकर मिश्रण घोल बनाकर पीने से उक्त दोष से बचा जा सकता है। प्राचीन काल में भोजन के बाद नमक मिलाकर छाछ पीने का प्रचलन था। आज भी कच्छ में यह प्रथा पायी जाती है। भोजन के बाद तुरन्त ठण्डा पानी पीने से गैस, अल्सर, आदि का रोग होने की संभावना बढ़ जाती है।

क्रमशः

पाटलिपुत्र का इतिहास

पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमल जी महाराज

मगधान्तर्गत चम्पापुरी नाम की नगरी में राजा श्रेणिक का पुत्र कुणिक राज्य करता था। यह बड़ा ही दानी और धर्मात्मा राजा हुआ। इसके उदायी नाम का पुत्र हुआ, जो बल, प्रताप तथा सच्चरित्र-पालन में उस समय अद्वितीय था। कालक्रम से राजा कुणिकने इस असार संसार को त्यागकर स्वर्गारोहण करने पर उसका पुत्र उदायी राज्यासन पर आसीन हुआ। अप्रतिम ऐश्वर्य प्राप्त करने पर भी पिताकी मृत्यु के शोक से राजा उदायी सदा उदास रहता था। सम्पूर्ण राज्य में अखण्ड आज्ञा-प्रवर्त्तन पर भी मेघाच्छत्र सूर्य के समान राजा उदायी का मुख निष्प्रभ (निस्तेज) सा रहता था। राजा की ऐसी शोचनीय दशा देखकर एक दिन मन्त्री आदि प्रधान पुरुषों ने उनसे उदासी का कारण पूछा। राजा ने आखों में आँसू भरकर बड़े ही विनीत भाव से कहा,- ***–जब मैं इस नगर में अपने पिता के क्रीड़ास्थानों को देखता हूँ, तब मेरा हृदय भर आता है और मुझे बड़ी व्यथा होती है। क्योंकि मेरे हृदय में पिताजी इस प्रकार बस गये हैं, कि जब मैं राज-सभा, राज-सिंहासन, स्नान, भोजन, शयनादि के स्थान देखता हूँ, झट स्मरण हो आता है, कि इन्ही स्थानोंपर पिताजी मुझे अपनी गोद में लेकर बैठते थे, स्नान-भोजन आदि करते थे। इससे मेरा हृदय समुद्र के समान उछलने लगता है और साक्षात् पिताजी दिखायी पड़ते है। ऐसी अवस्था में पिताजी के राज-चिन्हों को मैं धारण करूँ, यह सर्वथा अनुचित है और विनय गुण का भंग होता है अतएव इस राज-भवन में रहकर मेरे हृदय से शोक दूर होना एकान्त असम्भव सा प्रतीत होता है।*** राजा उदायी के मुख से इस प्रकार शोक एवं सन्ताप से भरे हुए बचन सुनकर स्वामी हितेच्छु राज कर्म के प्रवीण मन्त्री वर्ग ने कहा,—स्वामिन! इष्टका वियोग होनेपर संसार में किसे दुःख नहीं होता? और माता-पिता सदा किसके जीते रहते है? आपके पिता

श्रीकुणिक महाराज की भी उनके पिता श्रेणिक के मरने पर यही अवस्था हुई थी; परन्तु जब उनका चित्त राजगृह-नगर में स्थिर न हुआ, तब उन्होंने यह चम्पा-नगरी बसायी थी और यहाँ रहकर अच्छी तरह राज्य-पालन किया था। इस लिये आपका भी यदि यहाँ रहकर शोक दूर न हो, तो आप भी कहीं अच्छी जगह तलाश कराकर नवीन नगर बसाइये और वहीं राजधानी बनवाइये। यह सुनकर राजा उदायी ने ऐसा ही किया। नैमित्तियों (ज्योतिष विद्या जाननेवालों) को बुलाकर आज्ञा दे दी कि नवीन नगर बसाने के लिये कहीं अच्छी भूमि देखो। राजा उदायी की आज्ञा पाकर नौमित्तिक प्रदेश देखने के लिये यत्र-तत्र जंगलों में निकल पड़े। अनेक स्थानों को देखते हुए वे गंगा नदी के किनारे एक रमणीय स्थान में जा पहुँचे। उन्होंने वहांपर पुष्पों से लहलहाया सघन छायावाला एक ***पाटलि —*** वृक्ष देखा। उस मनोहर वृक्ष को देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए और अपने विद्या-बल से विचार किया, तो उनके ध्यान में आया, कि यह नवीन नगर बसाने योग्य अति श्रेष्ठ भूमि है। यहाँ राजधानी बनाने से राजा को स्वयंमेव ही सम्पदाएँ प्राप्त होती रहेंगी। सब नैमित्तिकों ने मिलकर यही निर्णयं किया और राजा के पास जाकर कहा,—राजन्! हमने बहुत स्थान देखें; परन्तु गंगा–नदी के तट पर एक ऐसा रम्य स्थान है, कि यदि वहां नगर बसाया जाये, तो राज्य की वृद्धि होगी और प्रजा को भी हर प्रकार का सुख होगा। उन्हीं नैमित्तिकों में से एक वृद्ध नैमित्तिक ने पाटलि–वृक्ष की उत्पत्ति के विषय में निम्नलिखित (उपाख्यान) कथा का वर्णन किया।

पाटलि वृक्षकी उत्पत्ति तथा अन्निका पुत्राचार्य का चरित्र।

इसी मगध-देश में मथुरा नाम के दो नगर थे; एक उत्तर मथुरा और दूसरा दक्षिण मथुरा कहलाता था। ये दोनों ही नगर बड़े रम्य तथा समृद्ध थे। उत्तर मथुरा में देवदत्त नाम का एक ऐश्वर्यशाली वणिक रहता था। एक दिन वह यात्रा के निमित्त दक्षिण मथुरा में गया। यहाँ भी जयसिंह नाम का एक वणिक रहता था। यह धन-धान्य से युक्त प्रसिद्ध व्यक्ति था। देवदत्त के वहाँ कुछ दिन रह जाने पर उसकी जयसिंह के साथ गाढ़ी मित्रता हो गयी। जयसिंह के अन्निका नामकी एक परम सुन्दरी कुमारी बहिन थी। एक दिन जयसिंह ने

देवदत्त को भोजन करने के लिये अपने यहाँ आमन्त्रित किया दोनो मित्र अपने-अपने आसनपर बैठे। उनके बैठ जानेपर सुन्दर-सुन्दर वस्त्र तथा बहुमूल्य अलंकारों से अलंकृत हो अपने भाई तथा उनके मित्र दोनों के थाल में भोजन परोसकर आप पंखा करने लगी। उस समय अन्निका का अलौकिक सौन्दर्य देखकर देवदत्त का मन इन प्रकार विवश हुआ, कि भोजन का स्वाद भी कुछ मालूम नहीं हुआ; किन्तु मित्रता में किसी प्रकार का फर्क न आये, इसलिये वह अपने मनोगत भाव को छिपाकर स्थिरता से जीमता रहा। भोजन कर लेने के बाद जय सिंह से रुखसत पाकर देवदत्त अपने मकान पर चला गया; परन्तु उनका मन मयूर वहीं नृत्य करता रहा।

दूसरे दिन देवदत्त ने अपने एक वृद्ध नौकर को जयसिंह के पास अन्निका के साथ विवाह सम्बन्ध का प्रस्ताव करने को भेजा। उस समय वृद्ध नौकर ने वहाँ जाकर बड़े नम्र तथा गम्भीर वचनों से अन्निका का विवाह देवदत्त के साथ करने के लिये जयसिंह से कहा। जयसिंह उसकी बात सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और बोले,—***देवदत्त को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह सर्व कलाओं का जानने वाला रूप-गुण-सम्पन्न और कुलीन व्यक्ति है। ऐसा वर मिलना बड़े ही सौभाग्य की बात है; किन्तु दुःख यही है, कि वह परदेशी है और मेरी बहिन मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारी है। देवदत्त के साथ विवाह कर देने पर मुझे बाध्य होकर देवदत्त के साथ उसे भेज देना पड़ेगा; यह मुझसे नहीं हो सकता। अतएव यदि देवदत्त सदा के लिये मेरे घर रहना मंजूर करें, तो मैं खुशी से उनके साथ अपनी बहिन का विवाह कर दे सकता हूँ। नौकर के द्वारा देवदत्त को यह बात मालूम हुई। उसने जयसिंह के घर पर रहना मंजूर कर लिया। जयसिंह ने भी बड़ी धूम-धाम से अपनी बहिन अन्निका का*** देवदत्त के साथ विवाह कर दिया।

विवाह के बाद वे दोनों दम्पत्ति परस्पर प्रेम में लीन हो, सांसारिक सुखों को भोगते हुए बहुत समय दक्षिण मथुरा में ही व्यतीत किया। एक दिन अचानक देवदत्त के माता-पिता का भेजा हुआ एक पत्र आया, जिसे पढ़कर देवदत्त के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी, किन्तु कहीं अन्निका देख न ले,

इसलिये रुमाल से अपने नेत्रों को पोंछ लेते थे। तो भी अन्निका अपने पति के उदास मुख मण्डल को देखकर ताड़ गयी, कि आज कुछ न कुछ प्राण प्यारे पति को दुःख अवश्य हुआ है। अतएव वह आप भी अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहने लगी,—***स्वामिन्! आज आपकी ऐसी दशा क्यों? यह पत्र किसका है। यह पत्र भी कोई साधारण नहीं, मालूम पड़ता; क्योंकि इसके देखने से आपकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है। और वह आँसू भी हर्ष के नहीं, खेद के दिखायी पड़ते है। अतएव आप शीघ्र कहिये, कि इसमें क्या रहस्य है?*** यह सुन देवदत्त ने कुछ उत्तर नहीं दिया; बल्कि मुँह नीचा कर लिया। इस पर अन्निका ने और भी उत्कण्ठा से देवदत्त के हाथ से उस पत्र को ले लिया और स्वयं वाँचना शुरु किया। उस पत्र में लिखा था :—

आवां हि चक्षुबिकलौ, चतुरिन्द्रियतांगतौ ।
जराजजरसर्वां गावासन्नयमशासना ।।
आयुष्मन्नपिजीवन्तौकुलीनस्त्वंपट्टक्षसे ।
तदेहयुद्वापयदृशावाबयोरुदतोसतोः ।।

अर्थात् — तेरे वियोग से हम चक्षुविहीन हो, चौरिन्द्रियपन को प्राप्त हो गये तथा बुढ़ापे से निर्बल होकर यमराज के समीप आ गये हैं। हे आयुष्मन्! हे कुलीन! यदि तू हमें जीता हुआ देखना चाहता है, तो शीघ्र आकर हमारे नेत्रों को शान्त कर।

अन्निका पत्र को बाँचकर बोली,—स्वामिन्! आप इस जरासी बात पर इतने शोकातुर क्यों हो रहे हैं? आप इसकी कुछ भी चिन्ता न करें। मैं अभी जाकर अपने भाई को समझा देती हूँ। आपका मनोरथ पूर्ण हो जायेगा।

यह कहकर अन्निका चली गयी और शीघ्र ही अपने भाई के पास पहुँचकर बोली,—***भाई! आप विवेकी होकर ऐसा क्यों कर रहे हैं? आपका बहनोई अपने कुटुम्ब के वियोग में दुःखी हो रहा है और मैं भी अपने सास-ससुर के दर्शन करना चाहती हूँ। इसीलिय आप उन्हें अपने***

घर जाने की आज्ञा दे दीजिये। यदि वे अपनी प्रतिज्ञा से बँधे रहने के कारण न भी जायेंगे, तो मैं अवश्य जाऊँगी। जयसिंह ने जब अन्निका का ऐसा बचन सुना तब किसी प्रकार अपने मन को धैर्य देकर उसने अपने बहनोई को घर जाने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर देवदत्त ने भी बड़ी प्रसन्नता के साथ अपनी प्राण प्यारी अन्निका को साथ लेकर उत्तर मथुरा की यात्रा की। अन्निका उस समय आसन्न प्रसवा थी। अतएव मार्ग में ही समस्त शुभ लक्षणों से युक्त एक दिव्य पुत्र-रत्न उससे उत्पन्न हुआ। उस पुत्र को देखकर दोनों दम्पति के हर्ष का पार न रहा। देवदत्त ने विचार किया कि घर जाने पर इस नव जात पुत्र का नाम रखा जायेगा; पर उसके साथ के लोग उसे अन्निका पुत्र क़ह कर पुकारने लगे। थोड़े दिनों में देवदत्त सकुशल अपने नगर में पहुँचा और माता-पिता के सामने विनीत भाव से खड़ा होकर बोला,—***यह आपकी पुत्रवधू तथा यह शिशु आपका पौत्र है।*** यह सुनकर उसके पिता परम प्रसन्न हुए, उन्होंने लड़के का मस्तक चूमा और बड़े हर्ष के साथ पौत्र का नाम ***सन्धीरण*** रखा यद्यपि उसका नाम सन्धीरण रखा गया; पर पूर्व अभ्यास के कारण लोग उसे अन्निका पुत्र ही कहते थे। वह बालक बचपन से ही बड़ा सुशील और सच्चरित्र था। और कभी-कभी संसार की असारतापर भी विचार किया करता था। युवावस्था प्राप्त करते ही संसार से उसका मन विरक्त हो गया। एक दिन उसने अपने माता-पिता आदि से आज्ञा लेकर श्रीजयसिंहाचार्य के पास जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। थोड़े ही दिनों में उस महात्मा ने निरतिचार चारित्र से अपने संचित कर्मरूप काँटे को चूरकर तपरूप अग्नि से कर्मरूप मल को भस्मकर दिया और श्रुत पारँग तथा ज्ञान-दर्शन चारित्र में परिणत हो गया। इसके बाद गुरु महाराज ने भी इन्हें योग्य समझकर आचार्य पद से विभूषित किया। ऐक दिन श्री अन्निका पुत्राचार्य विहार करते हुए गंगा तीरपर ***'पुष्पमद्र'*** नामक नगर में पहुँचे। उस नगर में पुष्पकेतु नाम का राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम पुष्पवती था। वह बड़ी ही साध्वी एवं पतिपरायणा थी। कुछ दिनों के बाद पुष्पवती के गर्भ से एक साथ दो सन्तानें पैदा हुई, जिनमें एक लड़का और

एक लड़की थी। पुष्पकेतु ने बड़े हर्ष से दोनों सन्तानों का नामकरण संस्कार किया। लड़के का नाम ***पुष्पचूल*** और लड़की का नाम ***पुष्पचूला*** रखा। ये दोनों शिशु चन्द्रकला के समान दिनों दिन बढ़ने लगे तथा परस्पर असीम प्रेम से रहने लगे। इन दोनों के असीम प्रेम को देखकर राजा ने विचारा कि यदि मैं अन्यत्र इनका विवाह सम्बन्ध कराकर वियोग कराऊंगा, तो ये अवश्य वियोग को सहन न कर प्राण त्याग देंगे। अतएव यहीं उचित है, कि इन दोनों में ही विवाह सम्बन्ध स्थापित करा दें। और उन्हें अपने ही घर रखें। स्नेह में डूबे हुए राजा ने कृत्याकृत्य का कुछ भी विचार न कर अपने पुत्र-पुत्री ***पुष्पचूल*** और ***पुष्पचूला*** का परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध करा दिया। पुष्पकेतुकी रानी ने उसे बहुत मना किया, कि आप ऐसा अनुचित कार्य न करें; किन्तु राजा ने उसकी एक भी न सुनी। विवाह हो जाने के बाद वे दम्पति नितान्त रागवान होकर परस्पर गृहस्थ धर्म का अनुभव करने लगे। कुछ दिनों के बाद ***पुष्पकेतु*** परलोक का अतिथि हो गया। पीछे रानी ने अकृत्य से निवारण करने के लिये पुष्पचूल और पुष्पचूला को बहुत कुछ समझाया; किन्तु राज्याभिषेक हो जाने के कारण ***पुष्पचूल*** स्वतन्त्र हो गया था एवं पुष्पचूला के साथ उसका अत्यन्त राग था; इसलिये उसने अपनी माता का कहा न माना। जब पुष्पवती से यह अकृत्य देखा न गया, तब उसने किसी जैन साध्वी से दीक्षा ग्रहण करली और घोर तपस्याओं के द्वारा अपना शरीर त्याग कर देवलोक में जा बसी। कुछ दिनों के बाद पुष्पवती का जीव-देवता ने अवधिज्ञान से अपने पुत्र-पुत्री को अकृत्य में जुड़े देखकर मन में विचारा, कि ये इन अकृत्यों से घोर नरक की वेदनाओं को कहेंगे। तथा स्वर्ग का दृश्य दिखाना शुरू किया, कि इन दृश्यों को देख वे अकृत्यों से बचें और दुर्गति के भागी न बनने पावें। इन स्वप्नों को देख, पुष्पचूला ने आश्चर्य से चकित हो, अपने स्वप्न का वृतान्त अपने पति से कहा। एक दिन राजा ने अन्निका पुत्राचार्य को अपनी सभा में बुलवाया और उनसे स्वर्ग और नरक का स्वरूप पूछा। अन्निका पुत्राचार्य ने यथार्थ वैसा ही स्वर्ग और नरक का स्वरूप वर्णन किया, जैसा कि पुष्प चूला ने स्वप्न में देखा था। पुष्पचूला ने

हाथ जोड़कर आश्चर्य से पूछा,- जैसे स्वर्ग के सुख मैंने स्वप्न में देखे हैं, वे किस कर्म के प्रभाव से प्राप्त हो सकते हैं?

गुरु महाराज बोले, — ***भद्रे! सुदेव सुगुरु और सुधर्म के प्रति श्रद्धा होने तथा जैन-धर्म की दीक्षा ग्रहण करने से स्वर्गापवर्ग सुख मिलते हैं।***

इस बात को सुनकर पुष्पचूला को संसार से वैराग्य हो गया अतएव हाथ जोड़कर वह गुरु महाराज से बोली,—

भगवान्! मैं अपने पति से पूछकर आपके श्रीचरणों में दीक्षा ग्रहण करूँगी।

आचार्य महाराज ***तथास्तु*** कहकर अपने स्थानपर चले गये। और रानी पुष्पचूला ने अपने पति के पास जाकर दीक्षा ग्रहण करने का आग्रह किया। राजा ने कहा,—

एक तरह से मैं तुम्हें दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा दे सकता हूँ, अन्यथा नहीं,—वह यह है, कि दीक्षा लेकर हमेशा ही तुम मेरे घर अन्न-जल ग्रहण करो, दूसरे के घर न माँगों, तो मैं आज्ञा दूँ।

रानी ने यह बात मंजूर कर ली और बड़े हर्ष से अन्निका पुत्राचार्य के पास जा दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद पुष्प चूला गुरुमहाराज की दी हुई शिक्षा को भली-भाँति ग्रहण करती हुई गुरु महाराज की पर्युपासना करने लगी। एक दिन मुक्ति सम्पदा का निदान भूत केवलज्ञान पुष्पचूला को प्राप्त हो गया; किन्तु केवलज्ञान होनेपर भी वह गुरु महाराज की वैसी ही भक्ति करती रही, जैसी पहले करती थी। केवल-ज्ञान को धारण करनेवाली साध्वी पुष्पचूला गुरु महाराज के बिना कहे, उनकी इच्छा के अनुसार भोजनादि का प्रबन्ध कर दिया करती थी। इससे गुरु महाराज बहुत ही आश्चर्य किया करते थे। एक दिन पुष्पचूला वृष्टि होते समय गौचरी लेकर आ रही थी। जब वह उपाश्रय में आ गई, तब गुरु महाराज ने देखकर कहा, — ***भद्रे श्रुतज्ञान को पढ़कर एवं जानकर भी तूने यह क्या किया?***

बरसात में साधु-साध्वी को मकान से बाहर निकलने की मनाई है; इसलिये तुझे ऐसा करना उचित न था।

पुष्पचूला बोली,—महाराज! जिस रास्ते उचित (अपकाय) पानी पड़ता था, उस रास्ते से मैं गौचरी लेकर आयी हूँ। इसलिये जिनागम के अनुसार कोई अनुचित नहीं; क्यों कि उसमें इस बात का प्रायश्चित भी नहीं है।

सूरीश्वर बोले,— भद्रे! अमुक रास्ते सचित (अपकाय) पानी और अमुक रास्ते अचित (अपकाय) पानी बरसता है, यह ज्ञान तुझे किस तरह हुआ? कारण, कि यह बात बिना अतिशय केवल ज्ञानके नहीं मालूम हो सकती।

पुष्पचूला ने कहा, — महाराज! मुझे आपकी कृपा से केवल ज्ञान प्राप्त हुआ है। इसी से मैं सब कुछ जानती हूँ।

यह सुनकर आचार्य महाराज के मन में केवल ज्ञान प्राप्त करने की लालसा उमड़ आयी और वे सोचने लगे कि देखे, मुझे इस भव में केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है या नहीं?

पुष्पचूला इस बात को समझ गयी, और बोली,— हे मुनि पुङ्गव! आप अधीर न हों गंगा नदी उतरते हुए आपको भी इसी भव में केवल ज्ञान प्राप्त होगा।

यह सुनकर आचार्य महाराज गंगा उतरने के लिये कुछ लोगों के संग चल पड़े। वे जब नावपर सवार हुए तो वे जिस ओर बैठे थे, उसी ओर से नाव डूबने को हो जाती थी। इसीलिये वे उन सब आदमियों के बीच में बैठ गये। तब तो सारी नाव ही डूबने लगी। यह देखकर उन सब लोगों ने बिचारा कि इस साधु महाराज के ही कारण नाव डूब रही है। अतएव इस महात्मा को ही गंगा की भेंट कर दो। यह सोचकर उन लोगों ने आचार्य महाराज को गंगा में फेंक दिया। उस समय जल के भीतर एक शूली खड़ी हो गई और उसपर आचार्य महाराज का शरीर लटक गया। आचार्य

महाराज शरीर की चिन्ता छोड़, (क्षपक श्रेणी क्षमा भाव) पर आरूढ़ हो गये। और (अन्तकृत) अन्त समय केवल-ज्ञान लाभ करके शुक्ल ध्यान में स्थित हो निर्वाण को प्राप्त हो गये। अन्निका पुत्राचार्य का शरीर जल जन्तुओं ने छिन्न-भिन्न कर दिया और उनकी खोपड़ी जल-प्रवाह से बहती हुई गंगा के किनारे आ लगी। एक दिन दैवयोग से उस खोपड़ी के अन्दर पाटलि वृक्ष का बीज आ पड़ा और वह बीज खोपड़ी के अन्दर ही अंकुरित हो गया। आज वही वृक्ष इस विशालता को प्राप्त हो गया है, जिसे देखते ही मनुष्यों का चित्ताकर्षित होता है तथा केवल ज्ञानी महात्मा की खोपड़ी में उगने से यह वृक्ष बड़ा पवित्र है इसलिये यहाँ नगर बसाओ। आपको सब प्रकार से कुशलता और समृद्धी प्राप्त होगी।

इस (उपाख्यान) कथा को सुनकर राजा ने बड़े हर्ष के साथ नैमित्तिकों का कहना मंजूर किया। और उन्हें मान दान देकर सभा से विदा किया। इसके बाद शीघ्र ही नौकरों को उस जगह नगर बसाने योग्य जमीन नाप ठीक करने की आज्ञा दी। उन्होंने नौकरों को अच्छी तरह समझा दिया, कि जमीन इस तरह ठीक करो, कि जिसमें वह पाटलि-वृक्ष नगर के ठीक बीचो-बीच में आ जाये। नौकरों ने राजा की आज्ञा के अनुसार जमीन नापकर उसमें ऐसा मनोहर नगर बसाया, जो अपनी सौन्दर्य-सम्पत्तियों से स्वर्ग को भी मात कर रहा था। नगर का मध्य भाग देवविमान को तिरस्कृत करने वाले देव-मन्दिरों, इन्द्रकी सभा को लज्जित करने वाले राजमन्दिरों और अन्य भाग पुण्यशालाओं, दानशालाओं, पाठशालाओं और औषधालयों से अलंकृत एवं विभूषित था। इस अनुपम विशाल नगर का नाम विशाल पाटलि-वृक्ष के आश्रय में होने का कारण ***पाटलि पुत्र*** रखा गया। राजा ने एक शुभ मुहूर्त में अपनी प्रजा के साथ उस नगर में प्रवेश किया। और पितृ वियोग को भूलकर सुख पूर्वक राज्य करने लगा। राजा बड़ा ही देवगुरुभक्त, प्रजापालक तथा प्रतापी था। उसके सामने अन्य राजन्यवर्ग अस्त प्राय हो गये। राजा उदायी के प्रचण्ड शासन से दूसरे छोटे-छोटे राजाओं की नाक में दम आ गया था; इसलिये सब लोग राजा उदायी से द्वेष रखने लगे। एक दिन उदायी ने किसी अक्षम्य अपराधपर एक

खण्डिये राजा का राज्य छीन लिया और उसे अपने राज्य से निकल दिया। वह खण्डिया राजा अपने परिवार के साथ वहाँ से भाग निकला। वह तथा उसका परिवार तो कालक्रम वश परलोक सिधार गये; किन्तु उसका एकमात्र पुत्र बच गया, जो उज्जैन में आकर उज्जैनाधि पति की सेवा करने लगा। उस समय उज्जैनाधिपति भी राजा उदायी के विरुद्ध था। यह बात उस राजपुत्र को मालूम हो गयी। मौका पाकर उसने उज्जैनाधिपति से कहा, कि यदि आपकी सहायता हो, तो मैं उदायी को खाक में मिला दूँ। यह सुनकर उज्जैन का राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उस राजपुत्र से कहा,—कि यदि तू यह काम कर सके तो फिर पूछना ही क्या है? किन्तु मेरी समझ में तो यह बिलकुल असम्भव है। क्यों कि ऐसा कौन है, जो राजा उदायी के प्रजापालन में अपने आप शरीर रूप तृण की आहुति देने का साहस करें? तो भी यदि तू कहता है, तो मैं तेरी सहायता करने को हर प्रकार से तैयार हूँ। इस प्रकार वह राज-पुत्र उज्जैनाधिपति का अनुमति पाकर पाटलि पुत्र नगर में आकर उदायी राजा के यहाँ (भृत्य) नौकरी का काम करने लगा। जब से उसने नौकरी करनी शुरु की, तभी से वह बराबर अपने (अभीष्ट) मनो इच्छाकी सिद्धि की चेष्टा करता रहा, किन्तु राजा उदायी को एकान्त में पाना तो दूर रहा,—उनके दर्शन भी नहीं हुए। अन्त में जब इस प्रकार से अपना मनोरथ पूर्ण होते न देखा, तब उसने दूसरे उपाय का अवलम्बन किया। उसने देखा कि राजा के अन्तःपुर में आने जाने के लिये जैन मुनियों को कोई रुकावट नहीं है। अतएव उस धूर्त राज-पुत्र ने अन्दर प्रवेश करने के लिये जैन साधुओं के स्वामी आचार्य महाराज के पास जाकर बड़ाही भक्ति-वैराग्य दिखाकर दीक्षा ग्रहण की। राजा उदायी अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथियों में पोषध ब्रत किया करते थे। और उस दिन आचार्य महाराज उदायी को धर्म सुनाया करते थे। एक दिन राजा उदायी ने पौषध किया था। आचार्य महाराज ने सन्ध्या के समय राज-पुरी में जाने का विचार किया। आचार्य महाराज को रात्रि में राजा के पास रहना पड़ता था। इसलिये जब कभी जाते, तो अपने साथ सबसे अधिक विश्वास पात्र साधु को भी ले जाते थे। इस बार उन्होंने उस नये साधु (धूर्त्त राज-पुत्र) को ही सबसे अधिक

विश्वासी समझा क्योंकि उसका वैराग्य और क्रिया देखकर उन्हें उस पर पूरा विश्वास हो गया था। अतएव उन्होंने उसे ही साथ चलने को कहा। आचार्य महाराज का वचन सुन वह मायाचारी श्रमण मन-ही-मन में परम प्रसन्न हुआ भक्ति का नाट्य दिखाता हुआ आचार्य महाराज की और अपनी उपाधि उठाकर आचार्य महाराज के साथ हो गया। आचार्य महाराज के राजकुल में पहुँचनेपर प्रतिक्रमण आदि किये जाने के बाद राजा उदायी बहुत देरतक उनसे धर्म चर्चा करता रहा। जब राज अधिक बीत गयी, तब आचार्य महाराज और राजा उदायी दोनों अपने-अपने (संस्थारक) बिछौनेपर सो गये, किन्तु उस धूर्त्त साधु को निद्रा न आयी क्योंकि **निद्रापि नैति भीतैव रौद्रध्यानवतां नृणाम्** । जब आधी रात बीत गयी, तब उस दुरात्मा साधु ने अर्थात् रजोहरण (ओधा) में से एक तीक्ष्ण छुरी निकाली और उसी से राजा उदायी का गला काट डाला। और पहरेदारों से जंगल जाने का बहाना करके राजकुल से बाहर निकल गया। थोड़ी देर के बाद जब आचार्य महाराज की नींद खुली, और उन्होंने इस महान अकृत्य को देखा, तब उनका हृदय भर आया। उन्होंने कातर दृष्टि से साधु की ओर देखा; किन्तु उसका तो वहाँ पर पता भी नहीं था; केवल उसके (संस्थारक) बिस्तर के पास लहूसे भरी हुई एक छोटी सी तेज छूरी पड़ी हुई थी। यह देखकर उनको विश्वास हो गया, कि पैशाचिक कार्य उसी साधु का है इससे वे चिन्ता के समुद्र में डूब गये। आचार्य महाराज सोचने लगे, कि मैंने जो उस दुष्ट को दीक्षा दी तथा विश्वास करके उसे राजकुल में लाया, यही मेरी भूल हुई। अतएव इसके लिये मैं ही दोषी हुँ। अब मेरे लिये यही उचित है, कि आत्मत्याग करके जैन धर्म की जो हानि होनेवाली है, उसकी रक्षा करूं; क्योंकि प्रातःकाल इस आदर्शनीय दृश्य को देखकर सब लोग इस कुकृत्य का कलंक मेरे ही ऊपर रखेंगे। ऐसा सोचकर आचार्य महाराज ने, उसी छुरी को अपनी गर्दनपर भी फेर ली, जिसने राजा उदायी के प्राणों का अपहरण किया था। सच है, महात्मा मान की रक्षाके लिये अपनी आत्मा तक दे डालते है। प्रातःकाल होनेपर शय्यापालक जब पौषधशाला में आये और उस अमगंल को देखा, तब उनका शरीर काँप उठा। उन्होंने

चिल्लाकर लोगों को पुकारा। फिर तो कहना ही क्या था? शीघ्र ही सब राज पुरुष वहाँ इकट्ठे हुए। राजा उदायी और आचार्य महाराज की लाशें देखकर सबका ही कलेजा काँप उठा, तथा सबने मिलकर यही निश्चय किया, कि इस मर्मभेदी अकाण्ड को उसी छोटे मुनि ने किया है। पीछे यह बात सर्वत्र फैल गयी सम्पूर्ण राजकुल में हाहाकार मच गया। कोई तो उस साधु के विषय में अनेक तर्क-वितर्क करने और उस दुष्ट को भला बुरा कहने लगे, कोई आचार्य महाराज और राजा का गाढ़ धर्म-प्रेम, पारस्परिक प्रीति और विश्वास का स्मरण करके अश्रुधारा बरसाने लगे। थोड़ी देर को चारों ओर निस्तब्धता (चिन्ता) सी छा गयी। पीछे मंत्री-सामन्तों ने उस पापात्मा को पकड़ने के लिये चारों तरफ घुड़सवार भेजे, परन्तु उसका कहीं भी पता न लगा। शोक विह्वल मन्त्रीवर्ग राजा और आचार्य महाराज की (और्ध्वदैहिक क्रिया) अग्निसंस्कार करने के बाद धर्म पूर्वक शासन चलाने लगे। राजा उदायी को मारकर वह दुष्ट शीघ्र ही उज्जयिनी नगरी में चला गया और उज्जैनाधिपति से उदायी के मरने का सब हाल कह सुनाया यह सुनकर अवन्तीपति ने दया की दृष्टि से उसकी ओर देखकर कहा,—***अरे दुष्ट! जब तू इतने दिनों तक दीक्षा-ग्रहण करके रात-दिन समता-प्रधान साधुओं के पास रहकर और हमेशा धर्मोपदेश सुनकर भी शान्त न हुआ, तथा ऐसा दुष्कर्म करने से पीछे न हटा, तब तू मेरा क्या भला करेगा? जा, मुंह काला करके मेरे राज्य से निकल जा।*** इस प्रकार कह उज्जैनाधिपतिने तिरस्कार पूर्वक उसे अपने राज्य से निकाल दिया।

क्रमशः

जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा

श्री पृथ्वीराज जैन

प्रायः सभी महान् धर्मों ने अहिंसा के आदर्श को माना है। श्रुति का कथन है ***मा हिस्यात् सर्वभूतानि***— किसी भी प्राणी का हनन नहीं करना चाहिये। छान्दोग्योपनिषद् (३-१७) में आत्मयज्ञ की दक्षिणा का वर्णन करते हुए अहिंसा का भी प्रतिपादन किया गया है। बौद्धों के पंचशील तथा दस शिक्षा पदों में अहिंसा का प्रतिष्ठित स्थान है। ईसाई धर्म में मान्य दस आज्ञाओं में ***वध न करो*** का भी समावेश है। हजरत मुहम्मद का कथन था कि सच्चा मुसलमान वह है जिसकी वाणी और जिसके हाथ से मानव समाज सुरक्षित है।

किन्तु अहिंसा की जो प्रतिष्ठा और प्रगति जैन धर्म में हुई है, वह अन्यत्र देखने में नहीं आती। जैन धर्म और अहिंसा एक प्रकार से पर्यायवाची शब्द बन गए हैं। सूत्रकृतांग (१-११) में कहा गया है कि ***ज्ञानी के ज्ञान का सार इतना ही है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता और अहिंसा का सिद्धान्त भी यही है और उसी को शान्ति अथवा निर्वाण भी कहते है।*** आचारांग (सू० १२७) में कहा गया है कि अनादि काल से तीर्थंकर भगवान् अहिंसा का ही उपदेश करते रहे है। और अनन्त काल तक करते रहेंगे। प्रश्न व्याकरण में बहुत ही सुन्दर शब्दों में अहिंसा की महिमा का कथन किया गया है। भगवान् कहते हैं—यह भगवती अहिंसा भयभीत जीवों के लिए शरण स्थान है, पक्षियों के लिए आकाश के समान आधाररूप है, प्यासों के लिए जल के समान है, भूखों के लिए भोजन के समान है। समुद्र में यह वाहन का काम देती है, चौपाये जीवों के लिये आश्रय का स्थान है, रोगियों का यही औषध-बल है, जंगल में भटकने वालों के लिये यह उनका साथी है, इस प्रकार अहिंसा श्रेष्ठतम है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति,

बीज, हरितकाय, जलचल, स्थलचल, खेचर, त्रस स्थावर, सर्व प्रकार के जीवों की क्षेमकारिणी अहिंसा है।

स्व० श्री आनन्द शंकर बापू भाई ध्रुव स्याद्वादमंजरी की भूमिका में लिखते हैं, ***जैनधर्म का मुख्य सिद्धात अहिंसा है। यह अहिंसा किसी को केवल शारीरिक पीड़ा पहुँचाने तक ही सीमित नहीं, अपितु इसका क्षेत्र तत्त्व ज्ञान भी है। दर्शन-शास्त्र के विषय में जैनधर्म की अहिंसा अन्य दर्शनों के प्रति सहिष्णुता के निष्क्रिय भाव तक ही नहीं रुकी, किन्तु उसने यह जानने के लिए सक्रिय प्रयत्न किया कि उन दर्शनों में प्रत्येक दर्शनों ने कहां भूल की है। परिणाम स्वरूप जैन-धर्म इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उन दर्शनों की भूले विशेष दृष्टिकोण से देखने पर अंशतः सत्य को भी ग्रहण करती हैं, उनमें से कोई भी सर्वथा असत्य नहीं, और यदि सभी दर्शन स्वयं तथा दोनों दृष्टिकोणों से तत्त्वों पर विचार करें तो सर्वत्र समन्वय दृष्टिगोचर होगा।***

इस तरह यह स्पष्ट है कि जैनधर्म का सम्पूर्ण भवन अहिंसा की दृढ़तम आधार शिला पर खड़ा किया गया है। जैनाचार्यों ने अहिंसा की सूक्ष्मता से छानबीन की है और अहिंसा ही जैनधर्म का एकमात्र उपदेश है। इस अहिंसा में स्याद्वाद रूप बौद्धिक अहिंसा भी है, तप और ध्यान रूप आत्मिक अहिंसा भी है। तथा समस्त प्राणियों के प्रति दया व सहानुभूति रूप नैतिक अहिंसा भी है। यही त्रिवेणी जैनधर्म है।

अहिंसा का विकासः—

अहिंसा का प्रारम्भ कैसे हुआ, यह एक विचारणीय प्रश्न है। सृष्टि का प्रारम्भ एक विवादास्पद विषय है। दार्शनिकों के भिन्न-भिन्न मतों की चर्चा करने का स्थान नहीं। मानव समाज का जन्म सादि हो, अनादि हो अथवा विकासवाद के सिद्धान्त के अनुसार हुआ हो, उसे तो सब स्वीकार करेंगे कि माता के त्याग, बलिदान, प्रेम और सहानुभूति से ही मनुष्य जन्म ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि माता हिंसा का त्याग करके ही माता का पद ग्रहण करती है। अतः अहिंसा उतनी ही प्राचीन है जितनी कि सृष्टि।

जहाँ तक अहिंसा के उपदेश का सम्बन्ध है, उसे हम वर्तमान अवसर्पिणी में प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव के समय से स्पष्ट देख सकते हैं। भरत और बाहुबलि का युद्ध हुआ। भरत के प्रहार के बाद जब बाहुबलि द्वारा आक्रमण किए जाने की बारी आई तो बाहुबलि ने अपना हाथ उठाया। उसी समय उसे युद्ध की निष्प्रयोजनता का भान हुआ। उठे हुए हाथ से प्रहार न हो सका। किन्तु हाथ तो उठ ही चुका था, अतः उससे लोचन काम लिया गया। बाहुबलि अब साधु होकर आत्मा के उद्धार में तल्लीन हो गए। राज्य के लिए भाई-भाई का युद्ध किस प्रकार व्यर्थ है, यह इस घटना से भली भाँति मालूम हो जाता है।

भगवान् शांतिनाथ के पूर्वभवों की एक कथा प्रगट करती है कि मनुष्य को अपना बलिदान देकर भी शरणागत जीव की रक्षा करनी चाहिए। समस्या विकट थी। बाज का कहना था कि कबूतर मेरा भोजन है, उसके न मिलने पर क्षुधा से पीड़ित हो मेरी मृत्यु हो जायेगी। उधर कबूतर को अभयदान दिया जा चुका था। इस धर्म संकट का हल एक धर्मात्मा पुरुष यही कर सकता था कि वह अपने मांस की भेंट कर बाज तथा कबूतर दोनों की रक्षा करें। परोपकार के लिये, दूसरों के क्षेम के लिये आत्म समर्पण का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

भगवान् नेमिनाथ ने देखा कि उनकी बरात का स्वागत करने के लिये, आतिथ्य सत्कार के उद्देश्य से सैंकड़ों निरीह पशुओं की निर्मम हत्या की जायेगी। बन्धे हुए पशुओं के चीत्कार ने उनके हृदय पर गहरा प्रभाव डाला है उन्हीं ने वर बनने से ही इन्कार कर दिया और संसार को सच्चा उपदेश देने के लिए, वे संसार का त्याग कर, ज्ञान की साधना तथा शान्ति के मार्ग की खोज करने लगे। उन्हीं ने जगत् के अपने व्यक्तिगत त्याग से बताया कि उत्सवों में किया जाने वाला पशुवध तथा मांसाहार त्याज्य है। दूसरे प्राणियों की जान लेकर मनुष्य जो आनन्द प्राप्त करता है, यह आनन्द नहीं क्रूरता है और पाप है।

भगवान् पार्श्वनाथ ने अहिंसा के सिद्धान्त को और बल प्रदान किया। कुमारावस्था में ही जनता के सन्मुख जलती हुई लकड़ियों में से सांप

निकाल कर उन्होंने यह संदेश दिया कि तप और ध्यान की आड़ में विवेक होकर जो क्रियाएं की जाती हैं। वे किस प्रकार अन्य प्राणियों के लिये पीड़ोत्पादक हैं। धार्मिक अनुष्ठान में भी हिंसा अहिंसा के विवेक की परम आवश्यकता है।

भगवान् महावीर :-

भगवान् महावीर के जन्मसे पूर्व भारत वर्ष की स्थिति धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त शोचनीय थी। धर्म शास्त्रों के प्रमाण की दुहाई देकर बड़े-बड़े खर्चीले यज्ञों का अनुष्ठान किया जाता था। उसमें स्वार्थ और लोभ के वशीभूत हो पशुओं की बलि दी जाती थी। अश्वमेघ, गोमेघ और कहीं-कहीं नरमेघ का भी विधान बताया जाता था। जन साधारण धर्म शास्त्रों का स्वयं अध्ययन न करें, इसका प्रबन्ध चतुराई से किया गया था। धर्म शास्त्रों को पढ़ाने तथा उनके पढ़ने के अधिकारी बहुत ही कम थे। शूद्र तो स्वप्न में भी इसका विचार न कर सकते थे। अन्य वर्ण के लोग वैदिक विधानों की जटिलता के कारण इस ओर प्रवृत्त न होते थे। अतः धर्म के क्षेत्र में कुछ ब्राह्मणों का ही एकाधिकार था। आम लोगों के पास उनकी आज्ञानुसार चलने के अतिरिक्त और कोई रास्ता ही न था। वर्ण और जाति का आधार जन्म था। एक शूद्र योग्यता, बल और प्रतिभा के होने पर भी शूद्र से उंचा न उठ सकता था। दूसरी और कामी, व्यसनी, व्यभिचारी ब्राह्मण का भी ब्राह्मणत्व तथा श्रेष्ठत्व कायम रहता था। गुण, आचार और कर्म की कोई शक्ति ही न थी। भिन्न-भिन्न वर्णों के धर्म और कर्त्तव्य नित्य, ध्रुव तथा शाश्वत बताए गंए थे ताकि किसी को आपत्ति का अवसर ही न मिले। वर्णों की उत्पत्ति का संबंध ईश्वर से जोड़कर जातिवाद की जड़े और भी मजबूत कर दी गई थीं। पददलित वर्ग अपनी मुक्ति की आशा ही न कर सकता था।

प्रोफेसर राजवाड़े तत्कालीन स्थिति के विषय में लिखते हैं कि ऐसा माना जाता था कि ***आहुतियों से देवों को प्रसन्न करना चाहिए और दक्षिणा देकर मनुष्य देवों को सन्तुष्ट करना चाहिए। क्योंकि दोनों देवता तृप्त होकर यजमान को स्वर्ग पहुंचाते हैं। क्षत्रियों से ब्राह्मण मेल***

रखते थे। वैश्य को दबा कर रखा जाता था। शूद्र का तो कहना ही क्या? वैश्य को ब्राह्मण व क्षत्रिय का भक्ष्य कहा गया है। उसे कितना ही खाया जाय, वह न घटेगा पुरुष सूक्त में इसकी उत्पत्ति जंघा से है और ताड्य ब्राह्मण में जननेन्द्रिय से। शुद्र की उत्पत्ति पांव से। वैश्य गधा है सदा दबा हुआ। शूद्र के लिये देवता नहीं, यज्ञ नहीं। उसे ताड़न करे या मार भी डाले। दास रूप में देने या बेचने में भी कोई हानि नहीं। वह चलता फिरता श्मशान है, उसके इतने समीप अध्ययन न करे कि उसे सुनाई दे। यदि वह जान बूझ कर श्रुति सुने तो लौह-या सीसा गलाकर उसके कान में डालना चाहिए।

स्त्रियों की स्थिति भी सन्तोष जनक न थी। अब वे वैदिक काल की अर्धांगिनी न थीं कि उनके बिना धार्मिक अनुष्ठान न हो सकें। उनकी स्वतंत्र सत्ता समाप्त हो चुकी थी और उनका दरजा केवल एक भोग्य पदार्थ का था। भोगोपभोग के जड़ पदार्थों या पशुओं के समान उनसे व्यवहार किया जाता था। चंदनबाला की कथा से स्पष्ट है कि स्त्रियां दासी के रूप में खुले बाजारों में बेची जाती थीं। जिस समाज में नारी का स्थान परिग्रह के रूप में हो, वह कभी नैतिक दृष्टि से उन्नति नहीं कर सकती।

भगवान् महावीर को एक ही समय कई मोर्चों से टक्कर लेनी थी। धर्मशास्त्रों के मन माने अर्थ, शूद्रों से पशुतुल्य व्यवहार, स्त्रियों की पराधीनता, यज्ञों में होनेवाला पशुसंहार और दार्शनिक जगत् में होने वाला वादविवाद-इन सबसे उन्हें अकेले ही युद्ध करना था। घर गृहस्थ, राज पाट तथा अन्य सांसारिक बातों से नाता तोड़ वे एक महान् साधना में जुट गए। साधना काल के साढ़े बारह वर्ष में उन्होंने जो कष्ट और परिषह सहन किए बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी जिस समता से उन्होंने उसका सामना किया, अपरिग्रह का जो अनुपम आदर्श अपनाया तथा जो उग्र तप किया, वह संसार के इतिहास में अपना सानी नहीं रखता। साधना के फलस्वरूप उन्हें सभी मोर्चों से एक साथ मुकाबिला करने के लिये एक अमोघ अस्त्र की प्राप्ति हुई। वह अस्त्र था अहिंसा। इसी के बल पर उन्होंने प्राण मात्र के प्रति

मैत्री का संदेश दिया, सबकी आत्मा समान है अतः किसी को भी पीड़ा नहीं देना चाहिये। जब आत्मा समान है तो इस जातिगत ऊंच नीच के भाव का क्या अर्थ? सबकी आत्मा में बीजरूप में समान शक्ति है तो शूद्र व स्त्रियां भी परिश्रम और साधना कर मोक्ष क्यों नहीं पा सकती? हम किसी को पीड़ा न दें, इसका अर्थ यहीं नहीं कि उसे शारीरिक कष्ट न दिया जाए, अपितु पीड़ा न देने का भाव यह है कि उसके हृदय और उसकी आत्मा को भी ठेस न पहुंचे। यह तभी संभव है जब हम सहिष्णुता से काम लें और विरोधी के दृष्टिकोण को भी समझ कर उसमें सच्चाई का अंश ढूंढ़ निकालें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भगवान् महावीर ने अहिंसा रूपी दिव्य शक्ति के आधार पर तत्कालीन सभी धार्मिक और सामाजिक बुराइयों की जड़ खोखली कर दी। अब हम जैन शास्त्रों के आधार पर अहिंसा के स्वरूप पर विचार करेंगे।

अहिंसा का स्वरूप :–

हिंसा न करना अहिंसा है। ***हिंसा*** शब्द हिंस् धातु से बना है जिसका अर्थ है वध करना, घायल करना, आताप पहुँचाना, दुःख या पीड़ा देना। दुःख या सुख उसे ही दिया जा सकता है जिसमें उन्हें अनुभव करने की शक्ति हो। अनुभव करने की या ज्ञान की शक्ति आत्मा में ही है किन्तु आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में ज्ञान रूप और आनन्द रूप होने के साथ-साथ अमूर्त भी है। सांसारिक आत्मा अनादि काल से कर्म से उसी तरह बद्ध है जैसे दूध और पानी। पौद्गालिक कर्मों से सम्बन्धित होने के कारण सांसारिक आत्मा मूर्त्त समझी जाती हैं और प्राणों से उसका नाता रहता है। प्राणों की कुल संख्या दस है और इनके द्वारा ही सांसारिक आत्मा सुख दुःख का अनुभव करती है। अतः हिंसा का भावार्थ हो जायेगा कि किसी के प्राणों का व्यपरोपण (अलग) करना, उसे मन, वचन या काय से किसी भी प्रकार का कष्ट पहुंचाना।

एक व्यक्ति दूसरे प्राणी को कष्ट पहुंचाता है या किसी प्राणी को कष्ट का अनुभव होता है अथवा वह दुःख और पीड़ा को बुरा समझता है इसका

निर्णय कैसे किया जाय? भगवान महावीर की द्वादशांगी वाणी में इसका बहुत अच्छा स्पष्टीकरण किया गया है। सूत्रकृतांग (२-२) में बताया गया है कि एक बार समस्त वादी एक स्थान पर एकत्रित थे। उस समय एक मनुष्य एक लोहे की कढ़ाई को जलते हुए अंगारों से भर कर और सांडसी से पकड़ कर वहां आया। उसने उन लोगों से कहा कि तुम सब धर्म मार्गों के संस्थापक तथा मोक्ष के उपदेष्टा हो, इन जलते हुए अंगारों से भरी हुई कढ़ाही को एक मुहूर्त तक खुले हाथों में पकड़ रखो। तब वह व्यक्ति बारी-बारी से सब के पास गया। सभी ने हाथ खींच लिया। उसने कहा, ***हाथ इसी लिए खींचते हो कि वह जले नहीं? यदि जले तो क्या हो? दुःख? इसी दुःख के कारण हाथपीछे करते हो। इसी गज या माप से दूसरों के विषय में विचार करना धर्म विचार है या नहीं? अतः जो लोग हिंसा का उपदेश देते हैं वे भविष्य में तदनुकूल फल भोगेंगे। जो श्रमण-ब्राह्मण अहिंसा का उपदेश देते हैं वे विविध दुःख नहीं पाते और सब दुःखों का अन्त करते हैं।***

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION

Distinctive Printers

36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013

Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT

P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue

Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL

Deals in all kinds of Aluminium

32A Brabourne Road

Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA

8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4

Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029

Resi: 247 6526/6638/2405126

Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON

18531 Valley Drive

Villa Park, California 92667 U.S.A.

Phone : 714-998-1447714998-2726

Fax : 7147717607

SPACE & WINGS

Travel Agents

Domestic & International Airlines

Phone : 242-7806/8835/5852

10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)

1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831

P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS

Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA

12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR

30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY

Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS

Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR

Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharai

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharai

From :-

M/s Phool Chand Kharai & Sons
21, Kali Krishna Tagore Street
Kolkata - 700 007
Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" — 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 — 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN — 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street. Kolkata 700 016 .

Tel : 229 8228. Fax : 229 3882. 245 7562

e-mail : info@subhash.com. website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Kolkata-700016 Ph:(033)229-8228.
Registered Office: Subhash House. F-27 2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains. — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani - Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti/ Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira.	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।

अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on

-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)

Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:

Winco Maritime Limited, London

-Puyvast Chartering BV., The Netherlands

-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:

The Shipping Corporation of India Ltd.

(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:

222, Tulsiani Chambers Nariman point,

Mumbai-400 021.

Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.

Fax: 2872664.

Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME

E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002

Vol. XXVI No. 2 **TITTHAYARA** **May 2002**

Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225